International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 11 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

कैवल्य–उपलब्धि एवं केवलज्ञान कल्याणक क्षेत्र

डॉ0 लखिन्द्र कुमार
एम.ए., पीएच.डी. (प्राकृत जैनशास्त्र)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

महावीर के तपसाधना काल में अनेक उपसर्गों एवं परिषदों को सहना पड़ा और अत्यन्त धैर्य, सहिष्णुता के साथ उनपर विजय प्राप्त की। वे दीर्घ तपस्वी थे। उनका तप विवेक की सीमा में आबद्ध था। सचमुच सहजभाव से तपस्या में रत महावीर क्षमा के समुद्र थे। महावीर अपनी तपः साधना में अडिग् थे। उन्होंने आत्मनिष्ठा एवं ज्ञान–ध्यान के अभ्यास द्वारा समताभाव की जागृति कर ली थी। ऐहिक–सुख–दुःख, आकुलता और व्याकुलता एवं मोह–ममता सभी उनसे दूर थे। उन्होंने आस्रव को रोककर संवर और निर्जरा को क्रियाशील किया। उनकी अत्मा की अनन्त तेजस्विता ज्ञान के उदयाचल की ओर झांक रही थी। एक दिन वह भी समय आ गया। वह काल था– हिन्दी के बैशाख महीने के शुक्ल पक्ष के दशमी तिथि तदनुसार 23 अप्रैल ई0 पू0 557 का वह शुभ दिन मानवता के इतिहास में अमर है। इस शुभ दिन में महावीर ऋजुकला नदी के तट पर अवस्थित जम्भृका गाँव के नजदीक शाल के वृक्ष के नीचे ध्यान में मग्न थे और क्षणक श्रेणी का आरोहन कर केवल ज्ञान को आवृत करने वाली कर्म प्रकृतियों का नाश करने के लिए ध्यान में अवस्थित थे। फलस्वरूप महावीर ने पवित्र हृदय से आज्ञा– विलय आदि चार महान धर्म–ध्यानों का आभास किया। अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व, सम्यक्त्व और सम्यक् मिथ्यात्व, किया। इससे महावीर की शुभ्रता और उज्जवलता सभी जगह प्रकट हो रही थी। धतिया कर्मों की 47 और अधातिया कर्मों 16 प्रकृतियों कुल तिरेसठ प्रकृतियों विगलित होने से कैवल्य रूपी भानु उदित हो गये। अब महावीर की सौम्य मुद्रों में सर्वज्ञता तरगांचित हो रही थी। कर्म शत्रुओं ने आत्मार्पण कर दिया था और ज्ञान प्राची पर कैवल्य रूपी सुर्य उदित हो चुका था। सूर्योदय होते ही जैसे सर्वत्र प्रकाश का विस्तार हो जाता है वैसी ही कैवल्य की प्राप्ति पर महावीर

का दिव्य तेज सर्वत्र प्रदीप्त होने लगा। अनन्त सौख्य की अनुपम विभूति से पृथ्वी का कण– कण मुस्कराने लगा। पीड़ित मानवता रक्षा के लिए पूर्ण आशा से प्रलकित हो उठी। राग द्वेष के विकल्प समाप्त हो चुके थे और आत्मा ने निर्विकल्पक स्थिति को प्राप्त कर ली थी। समता के सामने विषमता का अस्तित्व मिट चुका था। महावीर को कैवल्य का ज्ञान अथवा सत्य की प्राप्ति जिस दिन हुई थी उसका वर्णन करते हुए आचार्य पतिवृषम ने लिखा है–

वैशाख शुक्ला दशमी का शुभ दिन था जिस दिन महातपस्वी महावीर को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ। उस समय अपराह्ण काल और मद्या नक्षत्र था। ऋजुकूला नदी का पावन तट था। जृम्भिका गाँव पास में था। शाल वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न होकर क्षपक श्रेणी का आरोहण करते हुए धातिया कर्मों की 47 एवं अधातिया कर्मों की 16 सब मिलकर 63 प्रकृतियों का नाश करके महावीर ने कैवल्य की प्राप्ति की थी।

भारतीय संस्कृति में एक विशिष्टता पायी जाती हे कि यहाँ के स्थान एवं तिथियों में प्रायः मतवैभिन्नय रहे हैं। ठीक वही स्थिति महावीर के केवल ज्ञान प्राप्ति के स्थान एवं नदी के संबंध में भी दिखाई पड़ती है। बाबू कामता प्रसाद जी ने झरिया को जृम्भिक गाँव की मान्यता दी हैं। उनके अनुसार, प्राचीन लाट देश की विजय भूमि प्रान वर्तमान बिहार अंतर्गत छोटानागपुर डिवीजन के मानभूमि और सिंहभूमि में है। श्री नन्दलाल डे भी झरिया को ही जृम्भिक गाँव स्वीकार करते हैं। वे वहाँ की बराकर नदी को ही प्राचीन ऋजुकूला नदी बताते हैं।

इस ग्राम की अवस्थिति के संबंध में अन्य विद्वान मुनि श्री कल्याण विजय जी का कहना है, ''जृम्भिक गाँव की अवस्थिति पर विद्वानों का एकमत नहीं है। परम्परा के अनुसार सम्भेदाशिखर से दक्षिण दिशा में बारह कोस पर दामोदर नदी के पास जो जम्मीय गाँव है, वही प्राचीन जृम्भिक गाँव है। कोई सम्भेद शिखर से दक्षिण–पूर्व में लगभग पचास मील पर आजी नदी के पासवाले जमगाम को प्राचीन जम्भिय गाँव बताते हैं। हमारे मान्यतानुसार जम्भिक गाँव की अवस्थिति इन दोनों स्थानों से भिन्न स्थान में होनी चाहिए ? क्योंकि महावीर के विहार–वर्णन से जम्भिय गाँव जम्भ्य गाँव चम्पा के निकट कही रहा होगा।

बाबू कामता प्रसाद के झरिया को जम्भिय गाँव नहीं माना जा सकता, क्योंकि ऋजुकूला नदी नहीं है। बराकर नदी ऋजुकूला का अपभ्रंश नहीं हो सकता। साथ ही झरिया में कोई ऐसा चिन्ह्न नहीं है, जिससे तीर्थकर महावीर का केवल ज्ञान–प्राप्ति का स्थान मान लिया जाय और बाबू कामता प्रसाद भी पूर्ण स्नेहरहित नहीं है। इस स्थान के संबंध में मुनि कल्याण विजय को भी संदेह है। लेकिन उनका यह एक निश्चय है कि यह स्थान चम्पा के निकट ही कहीं होना चाहिए।

आवश्यक चूर्णि के अनुसार महावीर के वली होने से पूर्व चम्पा से जम्भिय, मिण्डिय, क्षम्माणी होते हुए मध्यमा पावा गये थे और मध्यमा से फिर जम्भिय गाँव गये थे। जहाँ उन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इससे प्रतीत होता है कि ऋजुकूला नदी एवं जृम्भिका गाँव दोनों मध्यमा के मार्ग में चम्पा के निकटवर्ती ही कहीं हो सकते हैं।

बिहार के भौगोलिक स्थानों का अध्ययन किया जाता है तथा कुछ जगहों पर घूमने से ज्ञात होता है कि महावीर का कैवल्य प्राप्ति स्थान वर्तमान क्चिल नदी के किनारे अवस्थित है।

महावीर के उपदेश के लिए जनता ललायित थी। चारों और उनका जयघोष होने लगा। सभी चाहते थे कि महावीर को जो कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसका आलोक दिग्दिगन्त तक फैले। समस्त प्राणी जगत् उससे स्वयं को कृतार्थ करे। अत्याचार, अनाचार, उत्पीड़न, शोषण से तड़फड़ाती भूमाता मुक्ति एवं शान्ति को प्राप्त करे।

महावीर, जिन्होंने कैवल्योपलब्धि कर ली है, उनकी शारीरिक बनावट– साथ हाथ ऊँची लम्बाई, दिव्य सुवर्णमय आभा, आजानुबाहु, सगचतुरस्त संस्थान, बज्र वृषभ नाराचसंहनन आदि से युक्त तीर्थकर महावीर तन और मन दोनों से ही अद्भूत सुन्दर थी। उनकी लावण्य छटा मनुष्यों को ही नहीं देव, पशु– पक्षी एवं कीट– पतंगों को भी सहज में ही अपनी ओर आकृष्ट करती थी। देवेन्द्र भी उनके दिव्य तेज से आकृष्ट हो चरण– वन्दन के लिए आते, अगणित मनुष्य–सामन्तों की तो बात ही क्या? उनके व्यक्तित्व को लोक–कल्याण की भावना ने सजाया, सँवारा था। वे अपने भीतर विद्यमान शक्ति का स्फोटन कर प्रतिकूल कण्टकाकीर्ण मार्ग को पुष्पावकीर्ण बनाने के लिए सचेष्ट थे। महावीर ऐसे नद थे, जो निर्झर थे, कुलिका

नहीं। उन्होंने कठिन से कठिन तपकर कामनाओं और वासनाओं पर विजय पाकर लोक–कल्याण का ऐस उज्जवल मार्ग तैयार कर लिया, जो प्राणिमात्र के लिए सहजगम्य और सुलभ था। महावीर के व्यक्तित्व में कर्मयोग की साधना कम महत्वपूर्ण नहीं है। उनके व्यक्तित्व में अनुपम प्रदीप–प्रकाश उपलब्ध है। उन्होंने संसार के घनीभूत अज्ञान, अन्धकार को दूरकर सत्य और अनेकान्त के आलोक द्वारा जन नेतृत्व किया।

उपर्युक्त अध्ययनों से प्रतीत होता है कि महावीर के देशनार्थ जो सभा–मण्डप अर्थात् समवशरण बना था, वह दिव्य एवं अलौकिक। उसमें उनके उपदेशों के श्रवणार्थ लोग एकत्र होने लगे थे। वहाँ पर एक विशाल जनसमूह इकट्ठा हो गयी। स्वयं सपरिवार देवराज इन्द्र भी उपस्थित हो गये। इन्द्र के द्वारा महावीर की अर्चना वन्दना की गयी और उस सभा–मण्डप के नियम का पालन करते हुए अपने कक्ष में जाकर बैठ गए। इस प्रकार हम देखते हैं कि समस्त वातावरण तीर्थकर महावीर के अमृतमय उपदेश सुनकर अपना केवलज्ञान से प्राप्त कल्याण को तैयार थे।

संदर्भ सूची

1. तिलोयपण्णती 4/1701.
   वद्धसाहसुद्धदसमी मधारिक्खम्भि वीरणाहस्स।
   रिजुकूलणदीतीरे अवरण्हे केवलं पाणि।।
2. भगवान महावीरः बाबू कामता प्रसाद
3. श्रमण भगवान महावीर, पृ. 370 (मुनि श्री कल्याण विजय जी)
4. तीर्थकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा–पृष्ठ 179. डॉ0 नेमी चन्द्र शास्त्री ज्योतिशाचार्य
5. वही–डॉ0 नेमी चन्द्र शास्त्री.